

पूसा-44 का विकल्प, पूसा-2090

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

सर्वोच्च न्यायालय ने पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान जैसे राज्यों में **पराली दहन** पर रोक लगाने की आवश्यकता पर जोर दिया, जिसके परिणामस्वरूप चावल की कस्मि पूसा-2090 को समस्याग्रस्त लंबी अवधि वाली चावल की कस्मि **पूसा-44** के विकल्प के रूप में अपनाने के लिये चर्चा शुरू हो गई है।

पूसा-44 और पूसा-2090 क्या है?

■ पूसा-44:

- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI) द्वारा उगाई गई लंबी अवधि की चावल की कस्मि **पूसा-44**, पराली जलाने में प्रमुख योगदानकर्ता रही है।
- **बुआई से लेकर कटाई तक 155-160 दिनों** का इसका विकास चक्र अक्टूबर के अंत में समाप्त होता है, जिससे अगली फसल से पूर्व खेत को तैयार करने के लिये बहुत कम समय बचता है।
- समय की कमी के कारण किसान जल्दी खेत तैयार करने के लिये **पराली जलाते हैं** जिससे गंभीर पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।
- हालाँकि इस कस्मि के धान को पकने में अधिक समय लगता है कति इसकी **अधिक उपज** (औसतन 35-36 क्वटिल प्रति एकड़) वाली **प्रकृति** इसे किसानों के बीच लोकप्रिय बनाती है।

नोट: मौजूदा खरीफ सीजन के दौरान विशेषकर पंजाब में **गैर-बासमती कस्मि** वाले धान की खेती में **पूसा-44 की खेती बढ़ी मात्रा में की जाती है।** जबकि **बासमती की कस्मि** वाले धान की कटाई में नरम पुआल बचता है जिससे **पराली दहन कम होता है**, लेकिन उनकी खेती का क्षेत्र अपेक्षाकृत छोटा होता है।

■ पूसा-2090: एक संभावित विकल्प:

- IARI ने **पूसा-2090** विकसित किया है, जो **क पूसा-44 तथा CB-501** (कम समय में पकने वाली **जैपोनिका चावल शृंखला**) के बीच **मिश्रण से प्राप्त एक उन्नत कस्मि** है।
- यह कस्मि धान की उचित पैदावार बनाए रखते हुए **120-125 दिनों की छोटी अवधि** में पक जाती है तथा पराली जलाने के मुख्य मुद्दे का समाधान करती है।
- यह **Pusa-44 की उच्च उपज विशेषताओं को CB-501 के त्वरित परिपक्वता चक्र** के साथ जोड़ता है, जो इसे एक आशाजनक विकल्प बनाता है।
- अखिल भारतीय समन्वयित चावल सुधार परियोजना में इसका परीक्षण किया गया है और **इसे दिल्ली के आस-पास एवं ओडिशा जैसे क्षेत्रों में खेती के लिये उपयुक्त** बताया गया है।
 - जिन क्षेत्रों में Pusa-2090 का परीक्षण किया गया है, वहाँ के किसानों ने **आशाजनक उपज परिणाम** की सूचना दी है।

पराली दहन के विकल्प क्या हो सकते हैं?

- **PUSA डीकंपोजर का प्रयोग:** डीकंपोजर **कवक उपभेदों को नष्ट कर** बनाए गए **कैप्सूल** के रूप में होते हैं जो धान के भूसे को तेज़ी से **वधित करने में मदद करते हैं।**
- **हैपपी सीडर:** यह एक ट्रैक्टर-माउंटेड उपकरण है जो पराली दहन का **पर्यावरण-अनुकूल विकल्प** प्रस्तुत करता है।
 - यह **धान के भूसे को काटने और उठाने** का काम करता है, साथ ही खुली मट्टी में गेहूँ की बुआई करता है तथा बुआई क्षेत्र पर भूसे को सुरक्षात्मक गीली घास के रूप में जमा करता है।
- **पैलेटाइजेशन:** धान का भूसा जब **सूख जाता है और पैलेट्स में परिवर्तित हो जाता है**, तो एक **व्यवहार्य विकल्पिक ईंधन स्रोत** बन जाता है।
 - कोयले के साथ **मिश्रित होने पर इन पैलेट्स का उपयोग थर्मल पावर संयंत्रों और उद्योगों में किया जा सकता है** जिससे संभावित रूप से कोयले के उपयोग से बचा जा सकता है तथा कार्बन उत्सर्जन को कम किया जा सकता है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. नमिनलखिति कृषपिदधतथिों पर वचिार कीजयि: (2012)

1. समोच्च बाँधना
2. रलिं कर्षोपगि
3. शून्य जुताई

वैश्वकि जलवायु परविरत्न के संदरभ में उपरोक्त में से कौन मदिटी में कार्बन पृथक्करण/भंडारण में सहायता/मदद करता है?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 3
- (c) 1, 2 और 3
- (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (b)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/pusa-2090-alternative-to-pusa-44>

